कक्षा - आठवीं
पाठ - चार

दीवानों की हस्ती

- भगवतीचरण वर्मा

शब्दार्थ

हस्ती - अस्तित्व
आलम - दुनिया, माहौल
स्वच्छंद - अपनी इच्छा के अनुसार चलने वाला, स्वतंत्र, बंधन रहित
आबाद - बसना
बंधन - बेड़ियाँ
उर - हृदय
असफलता - चाह के अनुरूप प्राप्त न होना
स्वयं - अपने आप
उल्लास - प्रसन्नता
जग - संसार
ठुकरा - जी भरकर
भाव - एक रस / रूप
सुख - दुख के घूँट - जीवन के सुख - दुख के अनुभव

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न - अभ्यास

कविता से

① कवि ने अपने आने को 'उल्लास' और जाने को 'आँसू बनकर बह जाना' क्यों कहा है?

उत्तर :- कवि का मानना है कि जब वे अपने बंधु - बांधवों से मिलने आते हैं तो सबके चेहरों पर खुशी छा जाती है और जब रहना जाने की बात आती है तो वही खुशी आसुओं का रूप धारण कर लेती है अर्थात् उनके जाने का दुख सहन नहीं होता। लेकिन वीरों को तो अपने चुने मार्ग पर बढ़ना ही होता है।

② भिखमंगों की दुनिया में बेरोक प्यार लुटानेवाला कवि ऐसा क्यों कहता है कि वह अपने हृदय पर असफलता का निशान प्यार की तरह लेकर जा रहा है? क्या वह निराश है या प्रसन्न है?

उत्तर :- कवि संसार के लोगों के प्रति स्वच्छंद रूप में प्रेम लुटाता है क्योंकि उसका मानना है कि इस दुनिया के लोग सदैव दूसरों से पाने की चाहत रखते हैं। सभी को प्रसन्न रखने पर भी उसका हृदय द्रवित है, उसके हृदय पर असफलता का निशान है कि अपने जीवनकाल में उसने बहुत प्रयत्न करके भी स्वतंत्रता प्राप्त नहीं की। कवि निराश है, वह समझता है कि प्यार और खुशियाँ लोगों के जीवन में भरने में असफल रहा।

③ कविता में ऐसी कौन-सी बात है जो आपको सबसे अच्छी लगी?

उत्तर :- कविता में हमें सबसे अच्छी लगी दीवानों की 'मस्ती'। सुख-दुख सब सहते हुए भी वे मस्त हैं उन्हें किसी की परवाह नहीं। मस्ती में जीकर जान हथेली पर रखकर देश को स्वतंत्र करवाना चाहते हैं।

भाषा की बात

* संतुष्टि के लिए कवि ने 'हँसकर' 'जी भरकर' और 'खुलकर' जैसे शब्दों का प्रयोग किया है। इसी भाव को व्यक्त करनेवाले कुछ और शब्द सोचकर लिखिए, जैसे - हँसकर, गाकर।

उत्तर :- खुश होकर, प्रसन्न होकर, देकर, सराबोर होकर।